Vol 6 Issue 8 May 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 3.8014(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 8 | MAY - 2017

REVIEW OF RESEARCH

डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के धार्मिक विचार

प्रा. चव्हाण मारोती पोमा
M.A. M.ed. P.Phil. Ph.D. SLET.

प्रस्तावनाः

सामाजिक क्रांति का स्वप्न देखने के लिए और उसे साकार करने के लिए किसी क्रियाशील व्यक्ति के व्दारा मुख्यतः समाज व्यवस्था को वह बदलना और उस व्यवस्था से संबंधित ज्ञान–मीमांसा को समाज के सामने रखकर नई व्यवस्था को स्पष्ट करना चाहए। उसे यह ध्यान में लेना आवश्यक होता है कि जिस ज्ञान–मीमांसा को प्रस्तुत कर रहा है उसमें समस्त संस्कृति से संबंधित आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक विषमता के स्त्रोंत, उनका स्वरूप तथा उससे निर्माण होनेवाले अन्याय का विश्लेषण करना आवश्यक हैं। इनकी पूर्ति डॉ. अम्बेडकर ने अपने जीवन में पूर्ण किया हैं। वैचारिक सामर्थ्य और नीति की आवश्यकताओं कें अनुसार प्रत्यक्ष कृति करने की पराकाष्ठा करते हूए संगठन कौशल्य के आधार पर भविष्य में स्थापित होनवाले समता मूलक समाज का सुंदर स्वप्न देखा और उसे समाज के सामने प्रस्तुत किया। अतः भारतीय समाज व्यवस्था के संदर्भ में डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर व्दारा प्रस्तुत की गई ज्ञान –मीमांसा सामाजिक पुर्नरचना की दृष्टी से मूलतः परिवर्तनकारी हैं। जहॉ तक परंपरा प्रियता और पुर्नज्जीवनवाद का सवाल है, वह किसी ओर वैकल्पिक व्यवस्था को स्वीकार नहीं करता। वह स्वयं को पूर्ण मानता हैं। ऐसे पुर्नज्जीवनवाद के लिए उदारवाद कोई जवाब नहीं हो सकता। उसे जवाब देने की क्षमता केवल आमूलचूल परिवर्तन में ही होती है। डॉ. अम्बेडकर ने हिंदू धर्म की परंपराओं, पवित्र कर्मकांडों के साथ साथ समस्त हिंदू व्यवस्था को ही झुठलाने का कार्य किया हैं। इसलिए उनके व्दारा की गई सामाजिक क्रान्ति केवल समाज की सतह को नहीं छूती बल्कि सामाजिक जीवन की समग्रता को पूरी तरह बदलने का विचार उसमें विद्यमान हैं। उनके विचारों में सामाजिक जीवन की जडींभूत समस्याओं के साथ जुझते हूए समाज की पुनर्रचना करने का आव्हान दिखाई देता हैं। मानवी जीवन और संस्कृति के विभिन्न अंगों को वह स्पर्श करता है। इसलिए जिस सैध्दांतिक आधार पर हिंदू धर्म और समाज को स्थापित किया गया हैं। उसी सैंध्दान्तिक मूलाधार पर डॉ. अम्बेडकर व्दारा प्रदत्त तर्कशुध्द ज्ञान–मीमांसा कुठाराघात करती है।

डॉ. अम्बेडकर व्दारा प्रतिपादित विचारों को यदि ठीक से समझा जाए तो ब्रिटीश शासन में शिक्षा और ज्ञान बुध्दिवाद के साथ साथ उदारमतवाद पर आधारित रहा हैं। अर्थात भारतीय समाज प्रबोधन की दिशा, उसकी गति और प्रकृति निर्धारित करने के कार्य में बुध्दिवाद और उदारमतवाद की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थी। समाज के सभी वर्ग से आये सुधारकों ने धार्मिक एवं सामाजिक विचारों का अध्ययन करते हूए धर्मसंस्था और धर्म व्दारा प्रतिपादन विसंगति को उदारवादी दृष्टीकोण से स्पष्ट किया था। उनके विचारों में हिंदू समाज व्यवस्था वर्णवाद, व्यक्ति और समाज का परस्पर संबंध धर्म तथा समाज की संस्थागत मान्यता एवं उनकी असंगति हिंदू समाज रचना का हेतु, अस्पृश्यों का इतिहास, विभिन्न सत्याग्रह, भारतीय समाज का तीन वर्गों में किया गया विभाजन, अस्पृश्यता और गुलामी की तुलना के साथ अस्पृश्यों का वर्तमान और उनके भविष्य से संबंधित बातों की बुध्दिवादी चिकित्सा सामने आती हैं। डॉ. गंगाधर पानतावने के अनुसार 'पूर्व में कभी भी स्पर्श न किये गए विषयों का उदघाटन और उनकी प्रस्तुति तथा सामाजिक न्याय प्रस्थापित करने का बोध डॉ. अम्बेडकर के लेखन में प्रकट हुआ है। जिस प्रकार वे धार्मिक पतन की तर्क कठोर मीमांसा करते है, उसी प्रकार समाज और धर्म के स्वरूप का समग्र रूप से बुध्दिवादी विश्लेषण भी करते है। इसलिए धार्मिक एवं सामाजिक दोषों की निर्भय होकर चिकित्सा करना और नई समाज व्यवस्था का आग्रह करना उनका लेखन धर्म है। अंतः स्पष्ट है कि डॉ. अम्बेडकर की विचारधारा प्रखर बुध्दिवाद और मूलगामी मानवतावाद पर आधारित हैं। प्रथमतः नवजागरण से निर्मित विचारों की सहायता से समाज सुधार की प्रक्रिया आरंभ की ओर विद्रोह तथा विद्रोह से क्रान्ति तक आजीवन संघर्ष किया। इसलिए उनकी छवि एक क्रान्तिकारक की हैं। अतः पत्रकारिता में धर्म और व्यक्ति तथा समाज के संबंध में उन्होंने जो विचार प्रस्तुत किये है उसे समझना आवश्यक हैं।

1. धर्म की परिभाषा :–

हिंदू धर्म में 'धर्म' शब्द का अर्थ निम्न प्रकार से दिखाई देता हैं। 'धर्मस्य तत्वं निहित गुहायाम्। पहला अर्थ पुरूष सुक्त में 'यज्ञ' को ही 'धर्म' कहा गया हैं। अतः 'यज्ञ' वैदिक धर्म का पूर्व स्वरूप रहा हैं। दूसरा अर्थ 'योग्य आचरण' और तीसरा

अर्थ 'आश्रम धर्म' से हैं। 'प्रयो धर्म स्कंधाः' अर्थात धर्म के ब्रम्हचर्य, गृहस्थधर्म एवं वानप्रस्थधर्म यह तीन स्कंध हैं। धर्म का चौथा अर्थ वर्णाश्रम धर्म का पालन करना भी बातया गया हैं। महामहोपाध्याय वामन पांडुरंग काणे के अनुसार ''हमारे धर्मशास्त्रों में 'धर्म' शब्द का संक्षिप्त अर्थ बताया जाए तो वर्ण और आश्रम के कर्तव्य, उत्तरदायित्व एवं अधिकार बताये जा सकते हैं। वर्णाश्रम धर्म में सभी का समावेश होता हैं। धर्म के अनेक अर्थ दिये गए हैं। इतना ही नहीं, धर्म की श्रृति अर्थात वेद देखे तो वह भी भिन्न भिन्न हैं और स्मृतियों का भी वही हाल दिखाई देता हैं।[1] अंतः हिंदू धर्मशास्त्रों में धर्म की कोई निश्चित परिभाषा नहीं मिलती। यद्यपि धर्म की पाचवीं परिभाषा 'यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिध्दिः स धर्मः' महर्षि कणाद ने प्रस्तुत की हैं। डॉ. अम्बेडकर इस परिभाषा का भारतीय समाज के संदर्भ में विश्लेषण करते हुए कहते हैं कि ''जिसके योग से अभ्युदय (ऐहिक उन्नति) और मोक्ष प्राप्त होता हैं वहीं धर्म हैं। पहले अभ्युदय और उसके बाद मोक्ष इस परिभाषा का साध्यक्रम हैं। अंतः 'अभ्युदय' अर्थात सांसारिक उत्कर्श या उन्नति यह (चतवेवमतपजल मसमअंजपवद) धर्म का पहला साध्य हैं।[2] अर्थात धर्म मनुष्य के सांसारिक जीवन में उसकी भौतिक उन्नति के लिए सहायक सिध्द होना चाहिए। मनुष्य व्दारा अपनी भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त करने के बाद ही मोक्ष या उसकी आध्यात्मिक उन्नति हो सकती है या होनी चाहिए। लेकिन ''अस्पृश्यता यह बात ही ऐसी हैं कि उससे अभ्युदय का मार्ग ही बंद हो जाता हैं। अस्पृश्यता के कारण समाज मे सहजता से नहीं रहा जा सकता। बहिष्कृत होकर समाज के बाहर गंदी बस्तियों में रहना पडता हैं। शिक्षा नहीं मिलती, प्रतिष्ठित व्यवसाय नहीं किया जा सकता। तब अभ्युदय कैसे होगा?''[3] अंतः डॉ. अम्बेडकर के मतानुसार प्रचलित हिंदू धर्म अस्पृश्य वर्ग की भौतिक उन्नति के लिए सहायक सिध्द नहीं होता। वस्तुतः व्यक्ति का जीवन सुखी होने के लिए तथा उसके जन्मतः प्राप्त गुणों एवं शक्ति का विकास होने के लिए उसे पूर्णावस्था तकपहुँचाने का काम धर्म का होता हैं। डॉ. अम्बेडकर मोक्ष की ओर विवेकवादी दृष्टिकोण से देखते हुए या पूछते हैं कि, ''निःश्रेयस' अर्थात 'मोक्ष' उसे किसने देखा हैं और कहा है? उसकी प्राप्ति यदि शुद्रों तथा अतिशुद्रों को हो भी जाये तो उससे क्या होनेवाला हैं?'' अर्थात जिनका जीवन ही कठिनाइयों से भरा हो उनके लिए पारमार्थिक मुक्ति या मोक्ष प्राप्ति का मार्ग खुला होने के बाद भी कोई काम का नहीं होता। मोक्ष के बजाए यथार्थ जीवन में मनुष्य की आशा–आकांक्षा और उसे सुख प्रदान करनेवाली भौतिक प्रगति पर अधिक जोर दिया हैं। औंर विशिष्ट वर्ग के लोगों को पीढियों से नरकीय यातना देनेवाले धर्म का उन्होंने 'अधर्म' कहा हैं। लेकीन इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्होंने धर्म को अस्वीकार किया हो। धर्म व्यक्ति और समाज के लिए आवश्यक होता है, धर्म का आधार व्यक्ति के जीवन तथा सामाजिक व्यवहार के लिए पोषक होता हैं यह उनका मानना हैं।

2. आचारशास्त्र को बदलने की आवश्यकता :–

कोई भी धर्म दर्शन, आचार धर्म (धर्मशास्त्र तथा नीतिशास्त्र) और विधि पर स्थापित होता हैं। धर्म के अन्तर्गत आचार–विचारों को स्वतंत्र बुनियाद होती हैं। अंतः धर्म दर्शन जहॉ समाज कल्याण के लिए दिशा प्रदान करता हैं वही आचार धर्म दर्शन में प्रतिपादित विचारों को नीतिशास्त्र के साथ जोडकर समाज को बेहतर तरीके से नियंत्रित करने का कार्य करता हैं। इसलिए नीतिशुध्द आचारण से जीवन जीने की बात हो या सम्पूर्ण समाज के हित में जीने की बात हो दोनों ही स्थितियों में मनुष्य का जीवन धर्म के लिए होता हैं यह डॉ. अम्बेडकर का कहना हैं। लेकिन यह स्थिति हमेंशा बनी रह सकती। समाज में एक ऐसा वर्ग विद्यमान होता हैं जो अपने निहित स्वार्थों के लिए धर्म तथा धर्मशास्त्रों को अपने लाभ के अनुकूल ढालकर नित्य नये उपायों के साथ समाज का शोषन करता रहता हैं। धर्म तथा धर्मशास्त्रों मे इस प्रकार की गडबड पैदा हो जाना किसी व्यक्ति या समाज के लिए घातक सिध्द होता है और धर्म व्यक्ति और समाज का जीवन बरबाद कर देता हैं। ऐसे समय में यह सवाल उठता है कि व्यक्ति का जीवन धर्म होना चाहिए या धर्म व्यक्ति के लिए? डॉ. अम्बेडकर के अनुसार ऐसे समय में व्यक्ति के लिए धर्म होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति का यह अधिकार है कि वह नैतिक मार्ग का अनुसरण करते हुए अपने सांसारिक जीवन में आगे बढें। इसके लिए धर्म की सहायता होना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती हैं।[4] अंतः यह आवश्यक है कि धर्म तथा धर्मशास्त्रों में प्रतिपादित नैतिकता एक ही हो। उनमें किसी भी प्रकार का विरोध नहीं होना चाहिए। हिंदू धर्म के संबंध में कहा जाए तो हिंदू धर्म का दशन और स्मृतियों में प्रतिपादित आचारधर्म के कोई समानता नहीं हैं। वह एक दूसरे से एकदम भिन्न है। जिस हिंदू दर्शन में सर्वाभूति एक ईश्वर का तत्व विद्यमान हैं, सचेतन और अचेतन वस्तुओं कों ईश्वर का ही अंश माना जाता हैं, वहॉ हजारों सालों से अस्पृश्य वर्ग को असमान और अपवित्र ही माना गया हैं। उसके साथ व्यवहार करना अधर्म की कोटी में आता हैं। इसका कारण एकदम स्पष्ट है। जिन ब्राह्मण स्मृतिकारों ने आचारशास्त्र की रचना की उन्होंने ही उसे ताक पर रख दिया। समाज को बेहतर तरीके से नियंत्रत करने के बजाए वे स्वंय को भूदेव घोषित कर धर्मशास्त्रों में अपने स्वार्थ भरे ऐजेन्डे की ही रचना करते रहे। परिणामतः हिंदू धर्म का दर्शन केवल कोरा दर्शन ही बनकर रह गया और सामाजिक व्यवहारों में आज भी जबरदस्त विषमता दिखाई देती हैं। डॉ. अम्बेडकर ने हिंदू धर्मशास्त्रों 'उदात्त विचार और नीच आचार की प्रबल विरोधी पहेली'' कहा हैं।[5] धर्म और नीति में आयी परस्पर विरोधी भूमिकाओं से समाज में किस प्रकार अनीति का फैलाव होता है यह हिंदू धर्म पायी जानेवाली जातिप्रथा अनिष्ट रूढि तथा परंपराओं से स्पष्ट होता है। इसलिए डॉ. अम्बेडकर ने हिंदूओं के धर्मशास्त्र और उसके अधिकार क्षेत्र को पुनः जॉचने एवं नये सिरे से स्थापित करने की बात करते हूए समाज और धर्म को एक दूसरे से अलग करने पर जोर दिया हैं। उनका मानना था कि धर्म और समाज को अलग किये बगैर कोई भी समाज व्यक्ति विकास गारंटी नहीं दे सकता। अंतः यदि हिंदू समाज में परिवर्तन करता है तो सामाजिक प्रश्नों का विचार धर्मशास्त्रों की आज्ञा और ब्राहमण समुदाय के निर्णयों के बजाए आधुनिक समाजशास्त्र के सिध्दांतो के आधार पर किया जाने चाहिए। इसके लिए उन्होंने समाज के अग्रणी रहे ब्राहमण वर्ग को पहल करने की सूचना की हैं।

3. समाज, संस्कृति एवं धर्म की पृथकता :–

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार समाज–संस्कृति और धर्म इन तीनों की बुनियाद स्वतंत्र होनी चाहिए। संस्कृति और समाज में भिन्नता को दर्शाते हूए वे कहते है, एक ही संस्कृति के नीचे पलबढे लोगों को एक ही समाज का घटक मानना गलत हैं। 'समाज' का अस्तित्व स्वतंत्र होता हैं। एक समाज की संस्कृति अलग होती है। अर्थात किसी एक संस्कृति के लोग एक ही समाज के घटक होंगे ऐसा नहीं है और यह नियम सभी ओर लागू भी नहीं होगा। अपनी बात को अधिक स्पष्ट करने के लिए उन्होंने यूरोप का उदाहरण दिया हैं जिसमें वे बताते है कि, ''यूरोप के सभी लोग एक ही इसाई संस्कृति के नीचे पले बडे है। वह सभी एक ही धर्म का पालन करते हैं और इसा मसी को ही पूजते हैं। जन्म से लेकर मृत्यू तक उनके सारे संस्कारों का स्वरूप एकसा है। पर इतने से ही वह सभी एक ही समाज के लोग है ऐसा कौन कह सकता है?''[6] भारत में हिंदू समाज और अस्पृश्य समाज का धर्म एक है। परंतु हिंदू समाज व्दारा लादी हुई अस्पृश्यता और सामाजिक बहिष्कार ने अस्पृश्यों को न केवल सामाजिक प्रतिष्ठा से बल्कि जीवनयापन के सभी साधनों से वंचित किया। अस्पृश्यता से आया हुआ दौर्बल्य–दरिद्रता व अज्ञान डॉ. अम्बेडकर की दृष्टि में ऐक ऐसी त्रिवेणी संगम से बनी दलदल है जिसमें यह समाज सदियों से फसा हुआ हैं। दीर्घकाल से उनके अंग में भीनी हुई दास्यता और हीन भावना इस दौबल्य–दरिद्रता व अज्ञान से उन्हें पीछे खींचती रही। अस्पृश्यता ने उनसे अर्थाजन के लिए व्यवसाय और ज्ञानार्जन के लिए शिक्षा छीनी। दसअसल अस्पृश्यों के लिए हिंदू समाज की नीति बिलकुल विपरीत हैं। अन्य समाजों में उस समाज का व्यक्ति यदि बाहर जाये तो वह सम्मान का पात्र होता है। लेकिन अस्पृश्य व्यक्ति जब–तक हिंदू समाज में रहता है वह पशु से भी नीच माना जाता हैं। अंतः डॉ. अम्बेडकर के मतानुसार यह स्थिति हिंदू समाज के लिए अत्यन्त घातक है। इसलिए हिंदू समाज की बिगडी हुई सामाजिक परिस्थिती को सुधारने के लिए सर्वप्रथम धार्मिक सुधार करने का सुझाव उन्होंने दिया।[7]

4. धर्मान्तर विचार :–

सार्वजनिक तौर पर सर्वप्रथम डॉ. अम्बेडकर ने येवला (नासिक) में आयोजित अस्पृश्य वर्ग परिषद (1935) के मंच से धर्मांतर की घोषणा की थी। 'जिस हिंदू धर्म में मेरा जन्म हुआ है, उस हिंदू धर्म में मैं मरूंगा नहीं' 1936 में मुंबई इलाका महार परिषद में उन्होंने धर्मांतर करने के अपने फैसले को मूर्त रूप प्रदान कर तमाम अस्पृश्य वर्ग को हिंदू धर्म त्यागने का आव्हान किया। उनका मानना था कि अस्पृश्यता का प्रश्न केवल उनके या अस्पृश्य वर्ग तक सीमित नहीं है। यह प्रश्न अखिल हिंदू समाज का प्रश्न होने से हिंदू धर्म में रहकर ही उसे सुधारना आवश्यक हैं। यदि हिंदू समाज अस्पृश्यता समान घृणित रूढि को त्यागकर उच्च मानवीय मुल्य व्यवस्था को स्वीकार करते हुऐ व्यवहार मे उसका पालन करता हैं तो धर्मांतरण की कोई आवश्यकता नहीं हैं। इसलिए उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि, ''हम धर्मांतरण के लिए आज तैयार नही हैं। मग्रुर लोगों को सबक सिखाकर बहिष्कृत वर्ग के मानवीय आधिकार स्थापित करने की हिम्मत हम में हैं। हमें आशा है कि हिंदू समाज की निर्लज्जता का हम सफलता पूर्वक नष्ट करेंगे।[8] डॉ. अम्बेडकर को यह आशा थी कि हिंदू धर्म में सुधारना होगी और अस्पृश्य वर्ग को हिंदू धर्म में समाविष्ट किया जायेगा।'' यदी हमारे न्याय अधिकार स्वधर्म में रहकर भी प्राप्त नहीं होते हैं तो हमें दूसरे धर्म का मार्ग अपनाना ही होगा। इस संदर्भ में वे अपने आलोचकों से पूछते हैं कि लात खाकर भी उसी धर्म में रहना कहा तक उचित हैं।''[9] अंतः स्पष्ट है कि मानवीय अधिकारों का हनन करनेवाली का निर्माण करती ही हैं। धर्मांतरण के प्रश्न पर जनमत की टोह लेने के लिए 1936 में मुंबई इलाका 'महार परिषद' का आयोजन किया था। इस सभा में उन्होंने धर्मांतरण सें संबंधित सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की है, जिसे 'जनता' पत्र में 20 जूल 1936 को 'मुक्ति कौन पथे?'' नाम से प्रकाशित किया हैं। वे कहते है कि ''धर्मान्तरण कोई लडके का खेल नहीं हैं, न ही वह कोई शौक हैं। यह प्रश्न मनुष्य जीवन की सफलता से संबध्द है। एक बन्दरगाह से दूसरे बन्दरगाह तक का मार्ग जहाज ले जाने क लिए जितनी तैयारी नाविक को करनी पडती हैं उतना ही पूर्व नियोजन धर्मान्तरण के लिए करना होता हैं।''[10] अर्थात बाबासाहब व्दारा लिया गया धर्मान्तरण का निर्णय मनुष्य जीवन को पूर्णतः परिवर्तित करने का निर्णय रहा हैं। वे धर्मान्तरण के लिए अपने सारे पुराने विचारों और प्रतिबध्दताओं को पहले किनारे पर ही त्यागने का आग्रह करते हैं। धर्मान्तरण के लिए आवश्यक आध्यात्मिक कारणों का जो जिक्र उन्होंने किया है वहॉ उसका संबंध मात्र 'व्यक्ति विकास' से संबंधित हैं। लेकीन जो लोग स्वाभिमान की जिन्दगी जीना चाहते हैं, समानता चाहते है उन्होंने इस प्रश्न पर निश्चित ही विचार करना चाहिए' वे आगे बताते है कि' किसी भी संघर्ष में जिसके हाथों में सामर्थ्य होता है उसी की विजय होता है। अंतः अस्पृश्य किस प्रकार से समर्थ हो सकते है इसका हल देते हुए वे कहते है कि जिन हिंदूओं ने सदियों से उन्हें प्रताडित किया है उनका मुकाबला अस्पृश्य वर्ग हिंदू धर्म में रहकर नहीं कर सकते इसलिए उन्हें बाहरी सामर्थ्य की आवश्यकता है और उन्हें यह सामर्थ्य धर्मान्तरण से प्राप्त हो सकता है। स्वराज्य का संबंध स्वतंत्रता के साथ जुडा होने से वे कहते है कि हिंदुस्तान को जितनी स्वराज्य की आवश्यकता है उतनी धर्मान्तरण की आवश्यकता अस्पृश्य वर्ग को है।''यदि स्वतंत्रता मनुष्यमात्र के जीवन के लिए आवश्यक वस्तु है तो जिस धर्मान्तरण से अस्पृश्य वर्ग को स्वतंत्र जीवन प्राप्त हो सकता है वह धर्मान्तरण निरर्थक है ऐसा कोई नहीं कह सकता।''[11] अर्थात डॉ. अम्बेडकर के लिए धर्मान्तरण सम्पूर्ण स्वतंत्रता से संबंधित हैं।

डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने धर्मान्तरण के विषय में गहराई से अध्ययन करना जारी रखा। इस संबंध में सूबेदार सावदकर को लिखे पत्र में उन्होंने इसका जिक्र किया हैं कि '' मैं स्वयं हिंदू धर्म में नहीं रहुगॉ दूसरी बात यह है कि मै इस्लाम स्विकार नहीं करूंगा। फिलहाल मेरा झुकाव बौध्द धर्म कह ओर है।[12] सभी धर्म का गहराई से अध्ययन करने के बाद 15 अक्टूबर 1956 को नागपुर में अपने बौध्द धर्म अपनाने की भूमिका का विस्तार से विवेचन किया हैं। उनके अनुसार 'आर्थिक समृध्दता के साथ मन को सुसंस्कारित बनाने के लिए धर्म की नितान्त आवश्यकता हैं। धर्म व्यक्ति के मन में उत्साह का निर्माण करता है। यदि उत्साह न हुआ तो अभ्युदय भी नहीं हो सकता। धर्म जीवन में आशा पैदा करता है और आशा ही नष्ट हो जाए तो जीवन कैसे हो सकता हैं। अंतः व्यक्ति की सर्वांगिण उन्नति तथा मानवी प्रतिष्ठा के मूल्य उन्हें बौध्द धम्म में हि दिखाई देते हैं। भारत के राजनीतिक परिवर्तन के इतिहास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देनेवाले डॉ. अम्बेडकर धर्म की ओर की इतने आकर्षित क्यों हुए? प्रसिध्द विध्दान रावसाहेब कसबे के अनुसार ''जिस समय वे अपने धर्मान्तरण के विचार को लेकर चिन्तन कर रहे थे उसी समय स्वतंत्र भारत के लिए आवश्यक संविधान निर्मान का दायित्व भी उन्हें निभाना था। लिहाजा डॉ. अम्बेडकर व्दारा अपनायी गई धर्मान्तरण की भूमिका राजनीतिक तौर पर भारतीय समाज को बोधपूर्वक जागृत करने की प्रक्रिया है। 1947 में देश में जो एक राजनीतिक परिवर्तन हो रहा था वह एक प्रकार से सीमित अर्थों में राजनीतिक क्रांति ही थी। इस परिवर्तन को दिशा देने का काम बाबासाहब अम्बेडकर ने किया है।[13] अंतः इस संबंध में उन्होंने जो धार्मिक क्रांति की महत्ता को प्रतिपादित किया है उसे देखा जाए तो वे कहते है कि ''इतिहास इस सिध्दांत का समर्थन करता है कि सामाजिक एवं धार्मिक क्रांतियों के बाद ही राजनीतिक क्रांतियां होती है। जिस प्रकार यूरोपियन लोगों के राजनीतिक उध्दार का पूर्व लक्षण मार्टिन लूथर किंग व्दारा किया गया धार्मिक संस्कार था उसी प्रकार हजरत मुहम्मद पैंगबर व्दारा किया गया धार्मिक आंदोलन अरबों के राजनीतिक शक्ति बनने कारण बना। भारत में भी चन्द्रगुप्त व्दारा घटित राजनीतिक क्रांति के पीछे भगवान बुध्द व्दारा आरंभ किया गया धार्मिक सुधार का आंदोलन महत्वपूर्ण रहा है।''[14] अर्थात डॉ. अम्बेडकर की दृष्टी में राजनीतिक क्रांति से पूर्व सामाजिक एवं धार्मिक क्रांति होना अत्यन्त आवश्यक है। लोकतंत्र के लिए आवश्यक समाज रचना का निर्माण मूलभूत मानवाधिकार के आधार पर ही हो सकता है तथा उसके लिए आवश्यक नैतिक व्यवस्था बुध्द धम्म की नीति से प्राप्त होगी इस विश्वास के साथ ही उन्होंने बुध्द धम्म में परिवर्तित होने का निर्णय लिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. काणे पांडुरंग वामन, : धर्मशास्त्रविचार, मौजा प्रिटींग ब्यूरो, खटाववाडी, गीरगांव, मुंबई, प्रथम संस्करण, 1935. पृ. 209.
2. आमचे टीकाकार, : अग्रलेख, बहिष्कृत भारत, 29 जुलाई 1927.
3.आमचे टीकाकार, : अग्रलेख, बहिष्कृत भारत, 29 जुलाई 1927.
4. मुक्ति कौन पथे? सुगावा प्रकाशन, पुणे. जनता, 27 जून 1936.
5. मनोगत : अग्रलेख, मूकनायक 31 जनवरी 1920.
6.आजवर होतो तुझे सत्तेखाली तोवर केली विटंबना : अग्रलेख बहिष्कृत भारत, 16 नवंबर 1928.
7.हिंदू धर्माला नोटिस : अग्रलेख बहिष्कृत भारत, 15 मार्च 1929.
8. हिंदू धर्माला नोटिस : अग्रलेख बहिष्कृत भारत, 15 मार्च 1929.
9. आमचे टीकाकार : अग्रलेख, बहिष्कृत भारत, 29 जुलाई 1927.
10. मुक्ति कौन पथे? सुगावा प्रकाशन, पुणे. जनता 27 जून 1936.
11. मुक्ति कौन पथे? सुगावा प्रकाशन, पुणे. जनता 27 जून 1936.
12. ढोके, वामनराव,(अनुवादक) : डॉ. आंबेडकर के पत्र, संपादक–अजय कुमार, गौतम बुक सेंटर, प्रथम संस्करण, दिल्ली. पृ. 218.
13. कसबे, रावसाहेब, : आंबेडकर व मार्क्स, सुगावा प्रकाशन, पुणे. व्दितीय आवृत्ती, 2006. पृ. 176.
14. डॉ. भीमराव अम्बेडकर, : जाति–भेद का उच्छेद, पृ. 26.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org